श्रीमति चंचल जैन
पंचशील नगर
भोपाल
Mo. -7566586451

निबंध के मुख्य बिन्दु :-

- पाठशाला का उद्देश्य
- पाठशाला के अध्यापक की विशेषताएँ
- वर्तमान समय में किस पद्धति से बच्चो को पढ़ाया जाए.

संस्कार ही संस्कृति के जन्मदाता है जिस घर, परिवार, समाज, देश में मनुष्य के संस्कार जिस तरह के होगे वहाँ की संस्कृति वैसी ही होगी। पाश्चात्य संस्कृति ने संस्कारो को धो डाला है वर्तमान समय में संस्कारो की सुरक्षा के लिए पाठशालाओ का निर्माण बहुत आवश्यक हो गया है धार्मिक पाठशालाऐ ही बच्चों के चरित्र का निर्माण कराती है पाठशाला ही धर्म और संस्कारो की बात सिखाती है, ज्ञान का अनुष्ठान भी पाठशाला ही होती है। बच्चों के बाह्य वातावरण के प्रभाव को धोने (Brain-wash) का काम करती है बच्चों के जीवन को सुआकार देने का काम भी पाठशाला पूरा करती है।

<u>पाठशाला का उद्देश्य</u> :⇒ बच्चों के जीवन का विकास अंगूर की बेल के समान वृद्धिंगत होता है, बेल की तरह बच्चो को योग्य दिशा मे ले जाने से उनका जीवन सुखमय तथा श्रेष्ठ बना सकते है।

- पाठशाला भेजने का उद्देश्य बच्चों में जैनधर्म के प्रति अटूट श्रद्धान का भाव जागृत करना है।
- पाठशालाएँ खोलने का एक मुख्य उद्देश्य जैनधर्म के अस्तित्व को बचाये रखना भी है।
- वर्तमान में हम अल्पसंख्यक ही रह गये है नौकरी के लिए निकले बच्चे संस्कारो के अभाव में अन्य धर्मो में विवाह करने से जैनो की संख्या का कम होना है।
- विषम वातावरण में हमारी पीढ़ी धर्म विहीन न होने पाये तथा संस्कृति व संस्कारो की रक्षा के उद्देश्य से पाठशाला का होना आवश्यक है।
- पाठशाला का उद्देश्य अनुशासित, कर्मशील -

संयमित समाज का निर्माण करना ही है।

- श्रेष्ठ संस्कारों द्वारा राम, महावीर आदि के समान सर्वोन्मुखी, प्रतिभाशाली, अमरचंद दीवान के समान शेर को जलेबी खिलाने में समर्थ, भामाशाह के समान दानवीर, अर्जुन के समान वीर श्रवण कुमार के समान मातृ-पितृ भक्ति, अकलंक-निकलंक के समान धर्म रक्षक, अपनी बेटी को अञ्जना, सीता, द्रोपती, मैना सुन्दरी, चेलना की तरह कर्तव्य परायण बनाने का उद्देश्य पाठशाला का होना चाहिए।
- पाठशालाओं के खोलने का उद्देश्य धर्म को रूढ़िगत न मान कर धर्म के वास्तविक स्वरूप को सिखाना होना चाहिए।
- पाठशाला में भगवान बनने की कला अवश्य सिखाना चाहिए।

पाठशाला के अध्यापकों की विशेषताएँ :-

"संस्कारवान ही संस्कार दे सकता है"

- पाठशाला के शिक्षकों का लगन और समर्पण के साथ पढ़ाने से बच्चों का कल्याण तो होता ही है, साथ ही पढ़ाने वालों का भी कल्याण होता है। उत्थान होता है।
- अध्यापकों को समय-समय पर श्रेष्ठ विद्वानों व गुरुओं से चर्चा व मार्गदर्शन लेते रहना चाहिए।
- पाठशाला के अध्यापकों को निरंतर अध्ययनरत रहना चाहिए।
- अध्यापकों में सहनशीलता का गुण भी होना चाहिए उनको ध्यान रखना चाहिए कि बहुत छोटे बच्चों के साथ कैसा व्यवहार करें और बड़ों के साथ कैसा व्यवहार करें।
- अध्यापक को निष्पक्ष होना चाहिए तथा साथ ही कर्तव्य निष्ठ होना चाहिए।
- बच्चे पुस्तकों की बजाये आचरण को देख-कर जल्दी अनुशरण करते है अतः पाठशाला के

अध्यापकों में कथनी और करनी में एकरूपता, सादगी पूर्ण रहन-सहन वाला, देव, शास्त्र और गुरु के प्रति अटूट श्रद्धान रखने वाला, संयमी होना चाहिए।

- अध्यापक में एक प्रमुख गुण मातृत्व होना अत्यंत जरूरी है जो कमजोर बच्चों से यह कहे- बेटा घबराओ नहीं हम तुम्हारे साथ है
- पाठशाला के शिक्षकों में समय-पाबंदी का गुण होना चाहिए।
- अध्यापक का प्रसन्नचित्त और उत्साही होना जरूरी है

उपर्युक्त गुणों से सम्पन्न यदि शिक्षक होगा तो पाठशाला सफलता व शांति से सुचारु रूप से चलेगी।

वर्तमान समय अनुसार, किस पद्धति से बच्चों को पढ़ाया जाए?

अब सबसे महत्वपूर्ण बात- किस पद्धति से पाठशाला में पढ़ाया जाए? किसी भी कार्य को जितने रोचक तरीके से किया जाता है उतना ही सफल होता है। इस 4G के युग में पाठशाला में भी डिजीटल पढ़ाई करवाना होगा।

- सर्वप्रथम बच्चों की उम्र व ज्ञान के क्षयोपशम के आधार पर ग्रुप (कक्षाएं) बनाकर पढ़ाया जाये।
- छोटे बच्चों को चित्रों के माध्यम से, एक्शन के माध्यम से खेल-खेल में भजन व गीतों को सिखाया जाये।
- एनीमेशन (कार्टून) फिल्मों के द्वारा धार्मिक ज्ञान को रोचक बनाकर पढ़ा सकते हैं।
- पाठशाला में बच्चों को धर्म के नामपर डरा कर नहीं अपितु धर्म को व्यावहारिक जीवन से जोड़कर उनके अंतरंग में बैठा देना चाहिए।
- धर्म को रटाना नहीं बल्कि चाहिए बल्कि

छोटे-छोटे बिन्दु बनाकर नोट्स भी तैयार करवा कर याद करवाना चाहिए।

- वर्ष में पाठशाला में क्या पढ़ाना है कैसे पढ़ाना है लिखित कर लेना चाहिए।
- वर्ष में I Term, II Term, III Term परीक्षा लेते रहना चाहिए तथा बच्चो को पुरस्कृत करना चाहिए तथा छोटे सभी बच्चो को सान्त्वना पुरस्कार देकर प्रसन्न रखना चाहिए।
- बच्चो को समय-समय पर पिकनिक/तीर्थवंदना के लिए ले जाना चाहिए।
- अनुकूलता के साथ गुरुओ के पास ले जाना चाहिए गुरुओ से ही आचरण का धर्म सीखा जाता है
- पाठशालाओ को सुचारु रूप से चलाने के लिए बच्चों के जन्मदिन पाठशाला मे मनाया जाये और उन्हे नियम दें जैसे - कोई ऐसा काम नही करे जिससे माता-पिता की नजरें समाज में नीची हो जाये, आत्महत्या नही करने का नियम, देवदर्शन आदि, पर्सनल मोबाइल नही रखना आदि-आदि।
- बच्चो को रविवार को सामुहिक भूजन करवाना तथा मिष्ठान वितरण आदि भी रखना चाहिए।
- टी. व्ही. पर आने वाले खेलो के आधुनिकीकरण को अध्यात्म से जोड़कर प्रतियोगिताए करवाते रहना चाहिए।
- सुचारु और सारगर्भित पाठशाला चलाने के लिए पाठशाला की शुरुआत प्रार्थना से होना चाहिए फिर आरती करके बच्चो को 1 नियम देना चाहिए फिर अपनी-2 क्लास में जाकर णमोकारमंत्र से मंगलाचरण करना चाहिए हिन्दी ही नही अपितु संस्कृत व प्राकृत के पाठ भी याद कराके अन्य विषय को समझाना चाहिए और अंत में जिनवाणी स्तुति करवाना चाहिए।
- पाठशाला में पढ़ाते समय उदाहरण देकर, कहानियों के माध्यम से बच्चो को विषय को रोचक बनाकर पढ़ाना चाहिए।
- जिनशासन की प्रभावना हेतु सुचारु व

सारगर्भित पाठशाला चलाने के लिए सांस्कृतिक वार्षिक कार्यक्रम रखना चाहिए जिसमें बच्चों के नृत्य, नाटक (वर्तमान समस्या पर) और साथ में हर एक वर्ष में कलश व शास्त्र की स्थापना करना चाहिए तथा निष्कासन करके पुनः स्थापना आदि करना चाहिए।

- पाठशाला में पैरेन्ट्स मीटिंग भी आयोजित करना चाहिए जिससे उन्हें भी विषयवस्तु का ज्ञान रहे। पैरेन्ट्स को भी प्रतियोगिता रखना चाहिए
- बच्चों की नियमित अटेन्डेंस भी लेना चाहिए तथा 1 महिने की full attendance gift देना चाहिए।
- बच्चों को रोज देने वाले नियम को तख्ती पर जरूर लिखना चाहिए जिससे समाज के अन्य लोग भी उसका पालन कर सके।
- बच्चों का प्रत्येक वर्ष एडमिशन फार्म भरवाना चाहिए तथा पाठशाला में बच्चों के नैतिक मूल्यों के सर्वांगीण विकास का भी ध्यान रखना चाहिए
- फ्लेक्स आदि के माध्यम से गतिविधियों को तथा टॉपर्स बच्चों को छपा कर सुचारु, सफल व सारगर्भित बना सकते है।

इस प्रकार विभिन्न बातों को ध्यान में रखकर हम अपनी पाठशाला को सुचारु एवं सारगर्भित बना कर जिनशासन की प्रभावना करके तथा श्रमण संस्कृति की रक्षा कर सकेंगे तथा उस कच्ची व गीली मिट्टी को मंदिर का शिखर योग्य बना सकेंगे तथा आने वाले समय में जैन धर्म को उन्नति के शिखर पर ले जायेंगे।